e-paper : www.dailynewsactivist.com लखनऊ, सोमवार, 24 दिसंबर 2018, पौष मास कृष्ण पक्ष द्वितीया, संवत् 2075 विक्रमी वर्ष-12, अंक-70, पृष्ठ-12, मूल्य- ₹ 2.00, नगर संस्करण

शब्द शब्द संघर्ष

DNA डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट

RNI NO.: UPHIN/2007/41982 संस्करण : लखनऊ राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक website : www.dnahindi.com डाक पंजीयन : एसएसपी/एल.डब्लू./एन.पी.-358/2016-18

कैलिफोर्निया में जंगलों की आग पर बहस

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ट्विटर पर दावा किया कि कैलिफोर्निया राज्य के जंगल की आग खराब वन प्रबंधन का एक परिणाम है। इसकी सच्चाई अधिक जटिल है, चूंकि कैलिफोर्निया के आदिवासी लोग राज्य के दोनों सिरों को छोड़कर जंगल के अंदर की ओर भागकर चले गए हैं। राष्ट्रपति ट्रंप ने इसी साल 10 नवबर को ट्विटर पर वन प्रबंधन पर अनुमान लगाते हुए इस राज्य को संघीय भुगतान वापस लेने की धमकी दी थी। उनके इस बयान से अग्निशामकों यानी आग बुझाने वालों ने नाराजगी जताई क्योंकि कैलिफोर्निया के जंगल की आग के कारणों को बिना जाने और उसकी देखरेख के लिए जिम्मेदार स्थानीय नेताओं व विभागों की लापरवाही की छानबीन किए बिना आरोप लगाया गया था। यह सूचना भ्रामक है कि वन प्रबंधन इतना खराब है, जिसपर ट्रंप सुझाव दे रहे हैं। कैलिफोर्निया के वर्तमान वाइल्डफायर ने कहा- वन प्रबंधन ने एक अहम भूमिका निभाई है और यह जंगल की आग नहीं है। इसी क्रम में कैलिफोर्निया बार सांता बारबरा के वन्यजीव विशेषज्ञ मैक्स मोरिट्ज ने भी कहा कि यह आग जंगलों में भी नहीं लगी है। कैलिफोर्निया के जंगल में इतने बड़े पैमाने पर घातक आग का लगना और उसपर महंगे रखरखाव का कोई कारण नहीं है, इसके सिवाय कि वन प्रबंधन इतना खराब है। प्रत्येक वर्ष अरबों डॉलर दिए जाते हैं, फिर भी जंगलों के सकल कुप्रबंधन के कारण बहुत सारे लोगों की जान चली जाती है। अब या तो सही उपाय हो अन्यथा कोई और फेडरल भुगतान नहीं होगा! बल्कि यह वहां के कैंप और वूल्सी की आग है जो उत्तरी और दक्षिणी कैलिफोर्निया के मध्य में उन संवेदनशील क्षेत्रों से शुरू होती है जिन्हें जंगली-शहरी इंटरफेस के रूप में जाना जाता है। ऐसे स्थान जहां आदिवासी समुदाय अविकसित क्षेत्रों के करीब हैं, वहां के जंगलों या उसके पड़ोस से जंगलों में आग लगना आसान हो जाता है।

यूनाइटेड स्टेट्स डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चर की 2015 की एक रिपोर्ट में यह पाया गया कि 2000 से 2010 के बीच वाइल्डलैंड-शहरी इंटरफेस में जानेवाले लोगों की संख्या में पांच प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। रिपोर्ट के अनुसार, देश के हर तीन घरों में से एक घर के बराबर 44 मिलियन घर वनों के दायरे में आनेवाले शहरी इंटरफेस में हैं। सबसे अधिक ऐसी आबादी का घनत्वय फ्लोरिडा, टेक्सास और कैलिफोर्निया में है। यह भी सच है कि कैलिफोर्निया के जंगल बड़े हो रहे हैं और राज्य के अधिकतर बड़े जंगल इस सदी में हुए हैं। मेंडोसिनो बहुयामी आग इस वर्ष की शुरुआत में रिकॉर्ड के अनुसार कैलिफोर्निया की सबसे बड़ी आग थी जिसने कई एकड़ जंगल जलाकर भस्म कर दिया। कैंप फायर राज्य के इतिहास में पहले से ही सबसे विनाशकारी है, जिसमें छह हजार से अधिक घर जलकर स्वाहा हो गए हैं। अब आग का दायरा ही सिर्फ बड़ा नहीं हो रहा है, बल्कि वह और भी अप्रत्याशित होता नजर आ रहा है। आग के ये दायरे अक्सर आधी रात से अधिक गर्मी से जल रहे हैं, जबकि वे रात में ठंडे पड़ जाते थे।

अभिमत

● प्रो. भरत राज सिंह
brsinghlko@gmail.com

अब आग के ये लपटें पहाड़ियों की ओर तेजी से दौड़ रही हैं और अपने पड़ोस के उन जंगलों की ओर भी बढ़ रही हैं, जो अपेक्षाकृत सुरक्षित थे। शोधकर्ता और वैज्ञानिकों का मानना है कि इसके लिए जलवायु परिवर्तन में प्रभावी बढ़ोतरी को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है क्योंकि वैश्विक तापमान यानी ग्लोबल वार्मिंग में बढ़ोतरी के कारण वनस्पतियां तेजी से सूख जाती हैं और अधिक आसानी से जल जाती हैं। इसका असर सबसे अधिक घातक और महंगा वाइल्डलैंड व शहरी इंटरफेस में पाया जा रहा है जहां अधिक से अधिक घर, कस्बे और जीवन आग के हवाले हो रहे हैं। कैंप फायर पहले ही राज्य के अभी तक के इतिहास में सबसे घातक आग की परिभाषा में आ चुका है, कम से कम 29 लोगों की मौत 10 नवंबर तक हो चुकी थी। तभी यह कहा गया था कि आगे मरने वालों की संख्या बढ़ सकती है। डॉ. मोरिट्ज के अनुसार, हमारे पास पहले से ही संवेदनशील हाउसिंग का लेखाजोखा है। इन भवनों की संरचना जब हुई थी, वह पूर्व के दशकों मे भवन निर्माण कोड के अनुसार तैयार की गई थीं और वे आग प्रतिरोधी नहीं थीं जितनी अब उन्हें होना चाहिए। हमने अपने घरों को कहां और कैसे बनाया है, इस मुद्दे ने ऐसी घातक घटनाओं द्वारा हमारे कर्तव्य के प्रति हुई उदासीनता से अवगत कराया है। गौरतलब है कि कैलिफोर्निया राज्य के 33 मिलियन एकड़ वनों में संघीय एजेंसियां जिनमें वन सेवा और आंतरिक विभाग शामिल हैं, 57 प्रतिशत के मालिक हैं और उनका वे प्रबंधन करते हैं। जबकि 40 प्रतिशत हिस्से पर परिवारों का स्वामित्व है, जो मूल अमेरिकी जनजातियों या कंपनियों, औद्योगिक लकड़ी कंपनियों का अधिकार है और केवल तीन प्रतिशत हिस्सा ही राज्य और स्थानीय एजेंसियों के स्वामित्व में और उनकी देखरेख में है। यहां यह विचारणीय है कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने ट्वीट में यह निर्दिष्ट नहीं किया कि कौन-से संघीय भुगतान वन प्रबंधन खराब होने से रोक दिए जा सकते हैं। हाल के वर्षों में वन सेवा ने मृत वनस्पतियों से छुटकारा पाने के लिए अपने निर्धारित वन प्रबंधन प्रथाओं को और अधिक सुनिर्धारित या नियंत्रित करने की कोशिश की है, जो भविष्य के जंगल में आग लगा सकती है। लेकिन इसका बजट अग्निशमन लागत से अधिक रखा गया है। अमेरिकी कांग्रेस ने इस साल एक बजट पारित किया जिसमें से कुछ समस्याओं को ठीक करने के लिए और एक समर्पित अग्निशमन निधि बनाने के लिए तैयार किया गया था, लेकिन यह अगले साल तक प्रभावी नहीं होगा। बहरहाल, इस बहस से यह प्रश्न उठता है कि क्या विश्व के वैज्ञानिक जो अपने आंकड़ों अथवा अनुभव से तथ्य प्रकाश में लाते हैं, उसे व्यापारिक दृष्टिकोण से ही आंका जाना चाहिए या फिर वैश्विक जीव-जंतुओं के विनष्ट होने के खतरे से बचाने में विकसित देशों की सहभागिता सबसे आगे होनी चाहिए। इस बहस से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि यदि दुनिया के मनुष्यों और अन्य जीवों की प्रजातियां विलुप्त हो जाएंगी तो विकास की गति अपने आप ही रुक जाएगी। आज के जलवायु असंतुलन और वैश्विक तापमान की विभीषिकाओं को अधिक महत्व देने पर सभी सामाजिक कार्यकर्ताओं, राजनेताओं, वैज्ञानिकों व प्रबुद्धवर्ग को धरती को बचाने और जीव-जंतुओं के संरक्षण पर आगे आकर कार्य करना होगा। आज हम विकसित अथवा विकासील देश अपने-अपने देशों को अधिक धनाढ्य बनाने और सुख-सुविधाओं को बढ़ाने की होड़ में लगे हुए हैं और यह भूल जाते हैं कि जलवायु परिवर्तन और वैश्विक तापमान किसी देश की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता है। अत: सभी देशों को नरेंद्र मोदी जैसे कार्बन को घटाने जैसे महत्वपूर्ण निर्णय का स्वागत कर अपनी सहभागिता बढ़ाने की जरूरत है।